International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 23-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 58-59

नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल

डॉ. रामजय नाईक
सहायक प्राध्यापक, नागपुरी भाषा विभाग, जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची झारखण्ड, भारत

सारांश
बिन पायल के बिना पाँव अच्छे नहीं लगते, बिन जोत के दीया प्रकाशित नहीं होती। उसी प्रकार बिना ताल के पाँव थिरकते नहीं। बिना वाद्य के ताल सुनाई नहीं पड़ते। गीत–संगीत के साथी है वाद्य। दोनों के मिलन से निकली आवाज सुनते ही लोग थिरक उठते हैं। वे अपने–आप को रोक नहीं पाते और अन्त में नाच उठते हैं। जिसकी आवाज पूरे ब्राहमांड को जगा देती है वही संगीत है। संगीत में जादू है उसका तो कहना ही नहीं है। संगीत के साथ वाद्य का जन्म–जात धनिष्ठ संबंध है। जन्म से हीये दोनों जुडुवे हैं। जहाँ भी, कभी भी, और कहीं भीये जाते हैं तो दोनों साथ में मिलकर।एक दूसरे के बिना जीवन जीने कीये कल्पना नहीं कर सकता है। डॉ. गिरीधारी राम गौंझू लिखते हैं कि–"वाणी का श्रृंगार है संगीत और संगीत का सौंदर्य है नृत्य,एवं गायन–वादन का आभूषण है वाद्य। संगीत जीवन का अक्षय वरदान है जो गम को कम तथा खुशी को सौ गुणा बढ़ा देता है। झारखण्डी कहावत में चलना ही नृत्य है बोलना ही संगीत है और वक्ष वा नितम्ब ही मॉदर है।एक दूसरी लोकोक्ति भी है जिसे संगीत से प्रीत नहीं उसकी वाणी का कोई विश्वास नहीं। गायन वादनएवं नर्तन के बिना झारखण्डी जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।
झारखण्ड घने और भयंकर जंगलों का नाम है जहाँ भयानक जानवरों से सुरक्षा के लिए तीव्र ध्वनि उत्पादकयंत्र बनाए गए। इन तीव्र ध्वनि निष्पादन वालेयंत्रों की ध्वनि सेये खूँखार पशु गाँवों की ओर प्रवेश करने की हिम्मत नहीं कर पाते थे। क्योंकि जंगलों से घिरे खेत खलिहान, इनसे घिरे गाँव–घर और इनसे घिरा अखरा होता है। सांस्कृतिक केन्द्र अखरा गाँवों की हृदयस्थली है। अखरा से गूंजते वाद्य कानों में मधु घोलते प्रतीत होते हैं।"[1]

मूल शब्दः भयंकर, वाणी, श्रृंगार, आभूषण, नाच, नितम्ब आदि।

इस शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोत केरूप में वाद्य गीत ताल आदि कलाकारों, ग्रामीण संगतकार, प्रबुद्धजीवी आदि का सहयोग लिया गया है। द्वितीयक शोध सामाग्री केरूप में पुस्तकों के आधार पर अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

- नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल वाधयंत्रों प्रचलन को प्रोत्साहित करने कर अध्ययन करना।
- नागपुरी गीत को समाज में प्रसारित नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल करने का प्रयास करना।
- लोक साहित्य को जीवन रखना नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल साहित्य जगत् की मानवीय परम्परा रही है।
- लोक साहित्य के इन परम्पराओं को सजीव रखना नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल भी मानवता को सजीव रखने का साधन है।

समस्या

- नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल परम्परा को आर्थिक सहायता प्रदान कर उसे और अधिक विस्तारित करने की आवश्यकता है।
- नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल नागपुरी भासाा की परम्परा को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जा रहा है।
- नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल लोगों के साहित्य और अधिक पुष्ट नहीं हो पा रहे है।
- नागपुरी के वाद्य, गीत तथा ताल की समृद्धि में प्रशासन से भी सहायता नहीं हो पा रही है।

समाधान

ये वाद्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। पहला घन वाद्य–जिसे पिट–पिट कर बजाया जाता है, जैसे–ढॉक, नगेरा, मान्दर, नाल और ढोलक।सुषिर वाद्य–जिसे फूँक कर बजाया जाता है, जैसे–बाँसुरी, शहनाई, मुरली, भेर आदि। तन्तु वाद्य–जिसे तार के द्वारा कम्पन्न करके बजाया जाता है, जैसे–सारंगी, बेंजो,एकतारा टुहिला आदि। इसमें कुछ वाद्य रहित गीत होते हैं और कुछ वाद्य सहित।यहाँ वाद्य के बारे में उल्लेख करना समीचीन होगा
ढाँक–जिसकी आवाज सुनते ही पूरी प्रकृति हीझूम उठती है। धरती माता जाग उठती है। इसकी आवाज से विवाह पूर्ण होता है। विवाह केशुरू से लेकर अन्त तक परिवेश मंगलमय हो जाता है।यह बड़े लकड़ी को खोल बना कर बनाया जाता है। खोल के दोनों तरफ बकरी की खाल को मठ दिया जाता है। आकार मेंयह बड़ा होता है। इसकी मधुर आवाज देने के लिए घाँसी जाति (नाईक) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।डॉ. गिरिधारी राम गौंझू के शब्दों में–"ढाँक–ढोलक की ही बड़ी जाति का वाद्य है।यह भी खूब बड़ा होता है औरएक ही ओर से बजाया जाता है। इसके लिएक हाथ में टिपनी और दूसरे हाथ में खाड़ी के दोहरे चोट से इसकी आवाज बुलन्द, तेज व तड़तड़ाती हुई होती है।"[2] घाँसी जाति, जाति से ही नृत्य–संगीत व वाद्य के कलाकार होते हैं।

चित्र 1: ढाँक बजाते हुए घाँसी जाति काएक कलाकार

नगाड़ा

नगाड़ा की गूँजती तीव्र आवाज को सुनकर पूरी प्रकृतिएवं ब्रहमांड गूंज उठती है।यह झारखण्ड का प्रथम वाद्य के अन्तरगर्त आता है। इस नगाड़ा को बनाने के लिए भैंसे की मोटी चमड़ी और बड़ा लोहे के चदरे का प्रयोग किया जाता है।यह आकार में भिन्न–भिन्न प्रकार का देखने को मिलता है। झारखण्ड के विभिन्न समुदाय के लोग अपने–अपने अनुसार इसका आकार (बनावट) देते हैं। इसकी आवाज में कंपन्न और गुंजन होती है। जिसकी गूंज काफी दूर–दूर तक गाँव–कस्बों तक जाती है। इसके संगत देने वाले वाद्य हैं ढाँक, ढोलक (ढाँक का छोटा आकार) और शहनाई।ये तीनों वाद्य शादी–विवाह के सुभवसर में देखने–सुनने को मिलते हैं। पूरे वैवाहिक–रस्मों को इससेएक समां में बांधे हुए रखते हैं।ये तीनों वाद्य शादी–विवाह के शान हैं। डॉ. गिरिधारी राम गौंझू के अनुसार–"झारखण्ड का प्रथम वाद्य है नगाड़ा जिसकी बुलन्द आवाज दूर–दूर तक पहुँचती है।एक साथ कई नगाड़े बज उठते हैं तो लगता है बमबाडिंग हो रही हो।यहाँ तीन श्रेणी के नगाड़े होते हैं। पहला वृहद नगाड़ा जिसे धमसा कहते हैं।यहएक पूरे बड़े भैंस के चमड़े से बनाया जाता है। इसे छः व्यक्ति बाँस में ढोकर चलते हैं। दूसरा मध्यम कोटी का नगाड़ा दमामा जिसे गले में टाँगकर बजाया जाता है। तीसरा छोटा नगाड़ा जिसे टमक कहा जाता है। इसे कमर में सामने लटका कर बजाया जाता है। प्रायः नगाड़े कोयुध्द, अखरा, स्वागत, मुनादी, छऊ, पइका, मरदानी झूमर आदि सभी सदान–आदिवासी नृत्य–संगीत में प्रयोग किया जाता है।"[3]

चित्र 2: नगेरा बजाते हुए नगरची

मान्दर

मान्दर झारखण्ड के अखरा का शान है। इसके बिना अखरा सूना सा लगता है। इसकी मीठी आवाज को सुनकर लोग मोहित हो जाते हैं और अखरा की ओर खिंचे चले आते हैं। इसकी मीठी आवाज, बनावट, आकार–प्रकार जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है।यह चिकनी मिट्टी के अलावा मोटी लकड़ी से भी बनाया जाता है।यह भी अन्य वाद्यों के जैसा ही आकार–प्रकार में भिन्नता देखने को मिलती है। डॉ. गिरिधारी राम गौंझू के मतानुसार–"मांदर झारखण्ड का सर्वप्रिय, सुन्दर, आकर्षक, मधुर मीठी ध्वनि में गूँजनेवाला वाद्य है।"[4]

निष्कर्ष

प्रायः हर जाति वर्ग की अपनी शैली का मान्दर होता है। बनावट लगभगएक सी होती है। सदानों का माँदर जशपुरिया बड़ा और लम्बा होता है। खड़िया का माँदर जशपुरिया की तरह ही कुछ भिन्नता लिए हुए होता है। मुंडाओं (पूर्वी भाग के) का माँदर जशपुरिया से थोड़ा छोटा औरएक तरफ पतला होता है। उराँवों का माँदर मुंडाओं के माँदर की तरह होता है परन्तु तुंग छोटा मुंह भाग कुछ अन्दर होता है। संथालएवं हो लोगों का माँदर मुंडा माँदर की ही क्रमशः लघुतररूप होता है। खोरठा पंचपरगनिया और कुरमालीमाँदर बुची माँदरया थेचकी माँदर कहा जाता है।

चित्र 3: मिट्टी का मान्दर बनातेएवं सजाते हुए ग्रामीण कलाकार

सन्दर्भ

1. सखुआ पत्रिका, जनजातीयएवं क्षेत्रीय महोत्सव, 2008,पृष्ठ–13
2. सखुआ पत्रिका, जनजातीयएवं क्षेत्रीय महोत्सव, 2008, पृष्ठ–14
3. सखुआ पत्रिका, जनजातीयएवं क्षेत्रीय महोत्सव, 2008,पृष्ठ–14
4. सखुआ पत्रिका, जनजातीयएवं क्षेत्रीय महोत्सव, 2008,पृष्ठ–14